International Journal of Humanities and Social Science Research
ISSN: 2455-2070; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 29-09-2020; Accepted: 15-10-2020; Published: 30-10-2020
www.socialsciencejournal.in
Volume 6; Issue 6; 2020; Page No. 16-23

21 वीं सदी में बढ़ता आतंकवाद: एक वैश्विक समस्या

Sunanda Anshul Raut

Assistant Professor (CHB), Department of Politics Science, Dr. Madukarrao Wasnik Pws College Nagpur, The Rashtrasant, Tukadoji Maharaj Nagpur University Nagpur, Maharashtra, India

सारांश

मनुष्य ने सोचने की अपनी क्षमता का अधिकतम उपयोग करके अपनी सुरक्षा को मजबूत करने का प्रयास किया। लेकिन क्या आधुनिक मनुष्य पूरी तरह से सुरक्षित है? यह अधिक असुरक्षित हो गया है, हालांकि मनुष्य अन्य जानवरों की तुलना में सुरक्षित महसूस करते हैं, आज मानव सुरक्षा के लिए सबसे बड़ा खतरा मनुष्यों से है। आज हमारे देश के 608 जिलों में से 231 घुसपैठियों, आतंकवादियों और नक्सलियों के कारण खतरे में हैं। हमले चाहे माओवादियों के हों या जिहादियों के, हिंसा एक ही है। जिस तरह से दुनिया अवैध हथियारों के प्रसार के विरोध में आतंकवाद के कहर में फंस गई है और उनका प्रसार संयुक्त राज्य अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया में मौजूदा घटनाक्रम से स्पष्ट है। कई लोगों ने आशंकाओं को रेखांकित किया है कि पाकिस्तान में बढ़ते आतंकवादी संगठन और अफगानिस्तान पर नियंत्रण खो देने के कारण भारतीय उपमहाद्वीप हिंसा की चपेट में आ सकता है। भारत में एक बड़ी राजनीतिक विचारधारा है जो कहती है कि भारत में हिंदू-मुस्लिम दंगे नहीं हुए हैं क्योंकि किसी भी आतंकवादी हमले में आंशिक रूप से भाग्य का हिस्सा होना चाहिए और आंशिक रूप से उस समाज की राजनीतिक चेतना का एक हिस्सा होना चाहिए, लेकिन उस चेतना को आज भी समाज में गहराई से समझा जाता है। ऐसे आतंकवादी संगठन इसका फायदा उठा रहे हैं। कई देशों से। आय. एस. एक कुख्यात संगठन में शामिलहोने के लिए युवाओं के संघर्ष से पता चलता है कि एक आतंकवादी हरे या भगवा या लाल है, इस बारे में बहुत सारी बातें हैं। लेकिन जब बात शिया और सुन्नी चरमपंथियों की विदेश में एक-दूसरे की मस्जिदों पर बमबारी की आती है। तैयार होने का एकमात्र निष्कर्ष यह है कि आतंकवाद की कोई जाति या धर्म नहीं है। यह अपनी अमानवीय क्रूरता के लिए जाना जाता है, यही वजह है कि इस तरह के चर्च हमेशा निर्दोष लोगों को पकड़कर और धमकाकर उनका काम पूरा करते हैं और उनकी मांग पूरी न होने पर अंधाधुंध उनकी हत्या कर देते हैं।

मूल शब्द: वैश्विक आतंकवाद, आतंकवाद की जळे, वैश्विक आतंकवादी संगठन, भारत में आतंकवादी संगठन

प्रस्तावना

आतंकवाद आज दुनिया के सामने एक बड़ी चुनौती है। भारत पिछले चार दशकों से आतंकवाद का सामना कर रहा है। 21 वीं सदी की शुरुआत तक, आतंकवाद की प्रकृति भारत, श्रीलंका और इजरायल जैसे मुट्ठी भर देशों तक सीमित थी, लेकिन 11 सितंबर, 2001 को संयुक्त राज्य में वर्ल्ड ट्रेड सेंटर पर हुए हमले ने पश्चिमी देशों को जगा दिया। उसके बाद, हालांकि, आतंकवाद की प्रकृति अंतर्राष्ट्रीय हो गई क्योंकि आतंकवाद केवल एक राष्ट्र तक सीमित नहीं था, बल्कि पूरी दुनिया के लिए सिरदर्द बन गया। अब अमेरिका, इंग्लैंड, फ्रांस, रूस, इराक, ईरान, सीरिया, सऊदी अरब, पाकिस्तान, नेपाल जैसे कई बड़े और छोटे देश आतंकवाद का सामना कर रहे हैं। ब्रिया फ्रोजन के अनुसार, "आतंकवाद का वैश्वीकरण" हो रहा है। प्रोफेसर जोनाह अलेक्जेंडर ने 1990 के दशक को "आतंकवाद का दशक" कहा। लेकिन आने वाले समय में, आतंकवादी गतिविधि में नाटकीय रूप से वृद्धि हुई है। 21 वीं सदी में, यह अनुपात बढ़ रहा है। इसने ऐसी स्थिति पैदा कर दी है जहां 21 वीं सदी को आतंकवाद की सदी कहा जाना है। आतंकवादी व्यवहार विचलित व्यवहार है। इसे "नवाचार" व्यवहार कहा जाता है, जैसा कि मर्टन का तर्क है। और यह निश्चित है कि यह व्यवहार अवांछनीय है। आतंकवाद से न केवल भारत बल्कि विश्व की शांति और सुरक्षा को खतरा है। दूसरी ओर, भारत आजादी के बाद से आतंकवाद की समस्या का सामना कर रहा है। भारतीय संसद पर हमला, मुंबई पर हमला, बम धमाके, जम्मू-कश्मीर घाटी में आतंकवादी हरकतें आतंकवाद के सभी संकेत हैं।

आतंकवाद का अर्थ

आतंकवाद शब्द Terror टेरो या (डेरेरे) है।

यह लैटिन शब्द Terroer टेरेरर(टेरर)से लिया गया है, जिसका अर्थ है घबराना या "घबराना"। और आतंकवाद "एक भयावह स्थिति का व्यवस्थित उपयोग है।" आतंकवाद अमानवीय हिंसा है। आतंकवादियों का मानवतावाद, आदर्शों से कोई लेना-देना नहीं है। केवल वे ही जानते हैं कि हिंसक वारदातों को अंजाम देना आम लोगों के दिमाग को हिला देता है। इसलिए, आतंकवाद को हिंसा से लैस किया जाता है। आतंकवाद समाज में भय का माहौल बनाता है। आतंकवादी हिंसा के अधिक से अधिक क्रूर कार्य करते हैं। आतंकवाद में हिंसा करने की धमकी देना और समय के साथ हिंसा की अमानवीय हरकतें शामिल हैं, न कि सिर्फ धमकी देना।

आतंकवाद की परिभाषा

1 जेनकिन के अनुसार-"लोगों के मन में भय पैदा करने के लिए हिंसा का खतरा, हिंसा का कार्य हिंसा को प्रचारित करने के सुनियोजित प्रयास से होता है"।

2 सामाजिक विज्ञान का विश्वकोश - "निष्ठा की शपथ प्राप्त करने के लिए एक संगठित समूह द्वारा मुख्य रूप से हिंसा का नियोजित उपयोग"।

3 इंटरनेशनल काउंसिल के अनुसार - "आतंकवाद एक अपराध है जो राज्य के खिलाफ या किसी विशेष व्यक्ति, किसी विशेष समूह या आम जनता के मन में डर पैदा करने के लिए एक जानबूझकर किया गया कार्य है"।

इस प्रकार आतंकवाद का अर्थ उपरोक्त परिभाषा से स्पष्ट हो जाता है। आतंकवाद हिंसा का उपयोग है या राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए हिंसा का खतरा है। जब शासक समूह के प्रतिनिधि हिंसा के ऐसे कार्यों का विरोध करते हैं, तो प्रतिशोध में आतंकवाद के कार्य किए जाते हैं। आतंकवादी समूह हथियारों के उपयोग के माध्यम से आतंक फैलाकर समाज में उनके महत्व को स्थापित करने का प्रयास करते हैं। आतंकवाद प्रभावी नेतृत्व, गुप्त संगठनों, हथियारों और धन की मदद से फैला है।

सभी सहमत नहीं आतंकवाद की परिभाषाएँ

कई राष्ट्र आतंकवाद का शिकार होते हुए दिख रहे हैं। सीमा पार आतंकवाद की समस्या ने राष्ट्रों के सिर में दर्द पैदा कर दिया है। इसके बावजूद, यह वैश्विक-विरोधी युद्ध खड़ा नहीं हो सका। क्योंकि आतंकवाद को अभी तक परिभाषित नहीं किया गया है। वर्तमान में आतंकवाद की 216 परिभाषाएँ हैं। प्रत्येक राष्ट्र अपने हितों के अनुसार इसकी व्याख्या करता है। इसके अलावा, क्योंकि सीमा पार से आतंकवाद को साबित करना या अस्वीकार करना मुश्किल है, और क्योंकि आतंकवाद को बढ़ावा देने वाले राष्ट्रों के खिलाफ दंडात्मक कार्रवाई पर प्रतिबंध लगाने के लिए अंतरराष्ट्रीय कानून या संयुक्त राष्ट्र के संविधान में कोई प्रावधान नहीं है, कई राष्ट्र अपने दुश्मन देशों को शर्मिंदा करने के लिए आतंकवाद के उपकरण का उपयोग कर रहे हैं। पाकिस्तान इसका एक अच्छा उदाहरण है। पिछले दो दशकों में पाकिस्तान द्वारा भारत में छेड़े गए गुप्त युद्ध ने एक लाख से अधिक निर्दोष लोगों के जीवन का दावा किया है। इसलिए भारत, पाकिस्तान के साथ तब तक कोई बातचीत नहीं करना चाहता जब तक कि वह भारत में आतंकवादी हिंसा को रोकना और सीमा पार से गोलीबारी बंद न कर दे।

भारत ने ऐसी भूमिका निभाई है। डोनाल्ड ट्रम्प ने आतंकवाद के लिए पाकिस्तान को एक अंतर्राष्ट्रीय केंद्र के रूप में भी संदर्भित किया। पेंटागन ने अपनी रिपोर्ट में स्पष्ट किया है कि पाकिस्तान भारत और अफगानिस्तान में आतंकवादियों का स्रोत है।

वैश्विक आतंकवाद की प्रकृति

सत्ता और आर्थिक प्रतिस्पर्धा में अपना वर्चस्व बनाए रखने के लिए, संयुक्त राज्य अमेरिका ने रूस के 1979 के अफगानिस्तान पर आक्रमण का समर्थन करने के लिए निर्धारित किया था। 1950 में पैदा हुए "मुहम्मद बिन लादेन" का ,ओसामा बिन लादेन 50 वां बेटा आतंकवादी कृत्यों को अपनाने लगा। संयुक्त राज्य अमेरिका ने रूसी सेनाओं का समर्थन करने के लिए ओसामा बिन लादेन का भी इस्तेमाल किया। इराक-ईरान संघर्ष में सद्दाम हुसैन का निर्माण करके, संयुक्त राज्य अमेरिका ने अरब दुनिया में एक विषाक्त वातावरण बनाया और अपनी महत्वाकांक्षाओं को प्राप्त किया, लेकिन फिलिस्तीनी-इजरायल संघर्ष के दौरान, इजरायल और मिस्र दोस्त बन गए। उसी समय, उन्होंने इज़राइल के साथ पक्षपात किया और फिलिस्तीनियों को नाराज़ किया। संयुक्त राज्य अमेरिका इजरायल के "मोसाद" खुफिया संगठन के काम से प्रभावित था, जो इस्लामी राष्ट्रों से घिरा हुआ है। और इज़राइल के झुकाव को मापना शुरू किया। परिणामस्वरूप, इस्लामिक राष्ट्रों में असंतोष फैल गया।

धार्मिक प्रेम ने अमेरिका और मुस्लिम ब्रदरहुड के बीच के माहौल को गर्म कर दिया है। इस्लाम के प्रसार को ईसाई कारण से बाधित किया गया है, और उनकी भावनाओं को तेज किया गया है। और पाकिस्तान को हथियारों और धन की आपूर्ति की जाने लगी। भारत में, चाहे जितने आत्मघाती बम विस्फोट हुए हों, लोकतंत्र का ढोंग करने वाले अमेरिका ने इसकी परवाह नहीं की। अमेरिका को कश्मीर की परवाह नहीं थी, विधान भवन पर हमला। लेकिन अमेरिकी वर्ल्ड ट्रेड सेंटर और पेंटागन पर 11 सितंबर के हमलों ने संयुक्त राज्य अमेरिका को जगा दिया। भारतीय शासकों के हितैषी बने हैं भारत की संप्रभुता पर मुंबई में 26/11 का हमला हुआ है। ये सभी बातें अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद से संबंधित हैं। अमेरिका और उनके

मित्र राष्ट्रों ने पूरी दुनिया को आतंकवाद की चपेट में ले लिया है। संयुक्त राज्य की संप्रभुता पर हमला होने पर देश जाग गया, लेकिन अब आतंकवाद को समाप्त करने की भाषा बोली जा रही है।

आतंकवाद का उद्देश्य

यद्यपि आतंकवाद का उद्देश्य समय-समय पर बदलता है, केंद्रीय आदर्श वाक्य लोगों और सरकार के स्थान पर आतंक का माहौल बनाना है।

तदनुसार, आतंकवाद के कुछ उद्देश्य इस प्रकार हैं।

1. 1.इसके पीछे मुख्य उद्देश्य मौजूदा व्यवस्था में आमूलचूल परिवर्तन लाना, आपको अनुकूल कार्रवाई करने के लिए बाध्य करना है।
2. समाज और राज्य के प्रति घृणा, निर्दोष लोगों और संपत्ति के निषेध के लिए कार्य करना।
3. 3.आर्थिक और राजनीतिक उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए आतंकवादियों की मदद को सूचीबद्ध करके राजनीतिक लाभ हासिल करना
4. 4.इसकेपीछे मुख्य उद्देश्य मौजूदा व्यवस्था में आमूलचूल परिवर्तन लाना, आपको अनुकूल कार्रवाई करने के लिए बाध्य करना है।
5. समाज और राज्य के प्रति घृणा, निर्दोष लोगों और संपत्ति के निषेध के लिए कार्य करना।
6. आर्थिक और राजनीतिक उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए आतंकवादियों की मदद लेकर राजनीतिक लाभ हासिल करना।
7. 7.सरकार और अधिकारियों पर अपनी मांगों को अनुमोदित करने के लिए दबाव डालना। आतंकवाद के कृत्य के पीछे यह मुख्य कारण है।
8. उनका मुख्य लक्ष्य दुश्मन का मनोबल गिराना है।
9. आतंकवादी गतिविधियों के लिए बाधाओं को नष्ट करना और एक ऐसा वातावरण तैयार करना जिसमें आतंकवादी गतिविधियाँ बड़े पैमाने पर हो सकें।
10. बैठकें, पत्रक का उपयोग, आतंकवादी कृत्यों में एक अतिरंजित चित्र बनाना।
11. सरकार और पुलिस की शक्ति को मजबूत करना, उन पर मानसिक आघात पहुंचाना, आंतरिक शांति और व्यवस्था को बिगाड़ना।

इस प्रकार, वह समूह जो हिंसा के कृत्यों के साथ सरकार पर दबाव डालता है, "चीनी दार्शनिक सून-झू, युद्ध शास्त्र के अग्रणी, 25,000 साल पहले आतंकवाद पर विस्तृत विवेचन।" "एक को मार डालो, दस हजार को डराओ" का सिद्धांत निर्भर करता है। अगर लोगों को नुकसान होता है, तो सरकार पर दबाव डाला जाएगा और उनकी मांगों को पूरा किया जाएगा।

आधुनिक आतंकवाद

21 वीं सदी की शुरुआत में, आतंकवाद ने एक नए आयाम पर ले लिया है। संचार और सूचना प्रौद्योगिकी के आधुनिक साधन आधुनिक संदेश सेवा में क्रांति ने समय और दूरी की बाधाओं को दूर कर दिया है। अत्याधुनिक हथियारों जैसे विस्फोटक, आधुनिक राइफल, रॉकेट, प्लेन, जिन्हें रिमोट कंट्रोल से विस्फोट किया जा सकता है, का उपयोग करना आधुनिक आतंकवाद की विशेषता है। इसके लिए, कई शिक्षित युवा जो आधुनिक तकनीक से अवगत हैं, इन संगठनों में शामिल हो रहे हैं। ये जवान आतंकवादी हैं। कसाब आतंकवादी देश की खुफिया प्रणाली पर काबू पाकर अपने अभियान को अंजाम देने में सफल रहे हैं। आय। एस आय। एस आय। इस संगठन में आतंकवादियों की संख्या अधिक है। आतंकवादी संगठन विभिन्न देशों के लोगों की भागीदारी भी इस संगठन की एक विशेषता बन गई है। अल-कायदा के नेताओं में सऊदी अरब, मिस्र, जॉर्डन, सीरिया, पाकिस्तान, अफगानिस्तान और अन्य देशों के लोग शामिल हैं। नशीली दवाओं का व्यापार, हथियारों का काला बाजार और आतंकवादी गिरोह सभी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक साथ आए हैं। आतंकवाद एक बहुराष्ट्रीय कॉर्पोरेट व्यवसाय बन गया है। ऐसा इसलिए है क्योंकि भस्मासुर अब अपने संगठन की रेखा पार कर चुका है। यही कारण है कि अमेरिका ओसामा बिन लादेन को खत्म करने के बाद भी आतंकवादी संगठनों को खत्म करने में सक्षम नहीं दिख रहा है। वर्तमान में, हालांकि, आतंकवाद के भूत के हमेशा के लिए दफन होने की संभावना नहीं है। इसका एक उदाहरण फ्रांस, रूस और इंग्लैंड में आतंकवादियों द्वारा किए गए बम विस्फोट हैं। आतंकवाद के रूप में भस्मासुर के कई अवतार आज बनाए गए हैं। ये आग लगाने वाले परिष्कृत हथियारों की एक बड़ी आपूर्ति बन गए हैं, दोनों खुले तौर पर और गुप्त रूप से, पाकिस्तान के प्रतिबंध के लिए। पाकिस्तानी शासकों ने पुलिस स्टेशनों, सैन्य स्टेशनों, पांच सितारा होटलों, दूतावासों, विश्वविद्यालयों, स्कूलों, कॉलेजों और अन्य स्थानों पर हमला किया है। यहां तक कि शासकों को दहशत की स्थिति में छोड़ दिया जाता है भारत में आतंकवाद को पनाह देने और समर्थन करने के साथ ही आतंकवाद ने पाकिस्तान का रुख किया है।

वैश्विक आतंकवाद की जड़े

आतंकवाद की जड़ें पश्चिम एशिया के तेल भंडारों पर कब्जा करने की राजनीति में हैं। अमरीका ने अलकायदा को समर्थन और बढ़ावा दिया। पाकिस्तान में ऐसे मदरसे स्थापित हुए, जिनमें इस्लाम के वहाबी संस्करण का इस्तेमाल "जिहादियों" की फौज तैयार करने के लिए किया गया ताकि अफगानिस्तान पर काबिज़ रूसी सेना से मुकाबला किया जा सके। अमरीका ने अलकायदा को 800 करोड़ डॉलर और 7,000 टन हथियार उपलब्ध करवाए, जिनमें स्टिंगर मिसाइलें शामिल थीं। व्हाईट हाउस में हुई एक प्रेस कान्फ्रेंस में अलकायदा के जन्मदाताओं को अमरीकी राष्ट्रपति रोनाल्ड रेगन ने अमरीका के संस्थापकों के समकक्ष बताया। ईरान में प्रजातांत्रिक ढंग से निर्वाचित मोसाडेग सरकार को 1953 में उखाड़ फेंका गया। उसके साथ ही वह घटनाक्रम शुरू हुआ, जिसके चलते इस्लाम की हिंसक व्याख्याओं का बोलबाला बढ़ता गया और उसके उदारवादी-मानवतावादी चेहरे को भुला दिया गया। मौलाना रूमी ने "शांति और प्रेम को इस्लाम के सूफी संस्करण का केंद्रीय तत्व निरूपित किया था।" फिर क्या हुआ कि आज वहाबी संस्करण दुनिया पर छाया हुआ है। इस्लाम का सलाफी संस्करण लगभग दो सदियों पहले अस्तित्व में आया था परंतु क्या कारण है कि उसे मदरसों में इस्तेमाल के लिए केवल कुछ दशकों पहले चुना गया। अकारण हिंसा और लोगों की जान लेने में लिप्त तत्वों ने जानते बूझते इस्लाम के इस संस्करण का इस्तेमाल किया ताकि उनके राजनीतिक लक्ष्य हासिल हो सकें।

इतिहास गवाह है कि धर्मों का इस्तेमाल हमेशा से सत्ता हासिल करने के लिए होता आया है। राजा और बादशाह क्रूसेड, जिहाद और धर्मयुद्ध के नाम पर अपने स्वार्थ सिद्ध करते आए हैं। भारत में अंग्रेजों के राज के दौरान अस्त होते जमींदारों व राजाओं (दोनों हिंदू व मुस्लिम) के वर्ग ने मिलकर सन 1888 में यूनाइटेड इंडिया पेट्रिआर्टिक एसोसिएशन का गठन किया और इसी संस्था से मुस्लिम लीग और हिंदू महासभा उपजे। सांप्रदायिक शक्तियों ने घृणा फैलाई जिससे सांप्रदायिक हिंसा भड़की। यूनाइटेड इंडिया पेट्रिआर्टिक एसोसिएशन के संस्थापक थे ढाका के नवाब और काशी के राजा। फिर हम मुस्लिम लीग और हिंदू महासभा जैसे सांप्रदायिक संगठनों के उभार के लिए हिंदू धर्म व इस्लाम को दोषी ठहरायें या उस राजनीति को, जिसके चलते अपने हितों की रक्षा के लिए इन राजाओं-जमींदारों ने इस्लाम व हिंदू धर्म का इस्तेमाल किया। इस समय हम दक्षिण एशिया में म्यान्मार और श्रीलंका में बौद्ध धर्म के नाम पर गठित हिंसक गुटों की कारगुजारियां देख रहे हैं।

अगर आतंकवाद मुख्यतः तेल उत्पादक क्षेत्र में उभरा है उन देशों-जैसे इंडोनेशिया-में नहीं जहां मुसलमानों की बड़ी आबादी है। आतंकवाद के बीज, तेल की भूखी महाशक्तियों ने बोये हैं न कि किसी धार्मिक नेता ने। मौलाना वहाबी की व्याख्या, जो सऊदी अरब के रेगिस्तानों में कहीं दबी पड़ी थी, को खोद निकाला गया और उसका इस्तेमाल वर्तमान माहौल बनाने के लिए किया गया। अगर हम आतंकवाद के पीछे की राजनीति को नहीं समझेंगे तो यह बहुत बड़ी भूल होगी। राजनीतिक ताकतें और निहित स्वार्थी तत्व, धर्म के उस संस्करण को चुनते हैं जो उनके हितों के अनुरूप हो। कुछ लोग लड़कियों के लिए स्कूल खोल रहे हैं और उनका कहना है कि वे ऐसा इसलिए कर रहे हैं क्योंकि कुरान ज्ञान को बहुत महत्व देती है। दूसरी ओर, उसी कुरान और इस्लाम के नाम पर कुछ लोग स्कूल जाने वाली लड़कियों को गोली मार रहे हैं। आतंकवादी समूह तो धर्म के अपने संस्करण पर भी बहस नहीं करना चाहते और ना कर सकते हैं। उन्हें तो बस उन चंद जुमलों से मतलब है जो उनके दिमागों में ठूंस दिए गए हैं और जिनने उन्हें बंदूक और बम हाथ में लिए जानवर बना दिया है।

हिंदू धर्म के नाम पर गांधीजी ने अहिंसा को अपना प्रमुख आदर्श बनाया। उसी हिंदू धर्म के नाम पर गोडसे ने गांधीजी के सीने में गोलियां उतार दीं। इस सब में धर्म कहां है? वर्तमान में जो इस्लामवादी आतंकी दुनिया के लिए एक मुसीबत बने हुए हैं, उन्हें अमरीका द्वारा स्थापित मदरसों में प्रशिक्षण मिला है। ऐसी भी खबरें हैं कि आईसिस आतंकियों के पीछे भी अमरीका हो सकता है। साम्राज्यवादी काल में भी राजनीति पर अलग-अलग धर्मों के लेबिल लगे होते थे। साम्राज्यवादी ताकतें हमेशा सामंतों को जिंदा रखती थीं। अब चूंकि तेल उत्पादक क्षेत्रों के मुख्य रहवासी मुसलमान हैं इसलिए इस्लाम का उपयोग राजनैतिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिये किया गया।

विश्व आतंकवादी संगठन

आज दुनिया के विभिन्न देशों में विभिन्न आतंकवादी संगठन संचालित हैं। अमेरिकी विदेश विभाग ने इन संगठनों की एक सूची जारी की है। इस सूची में संगठनों की संख्या की तुलना में दुनिया में अधिक आतंकवादी संगठन संचालित हैं। उनके उद्देश्य अलग हैं।

दुनिया में आतंकवादी संगठन इस प्रकार हैं।

1	**भारत**	**नागा बंडखोर संघटन, हिजबुल मुजाहिद्दीन, लष्कर-ए-तोयबा, जम्मू-कश्मीर लिबरेशन फ्रंट हरकत उल अंसार, युनायटेड फ्रंट (उल्फा)**
2	जपान	जपानी रेड आर्मी
3	पाकिस्तान	हरकत -उल -मुजाहिद्दीन ओर उनकी सहयोगी संघटन
4	इराण	मुजाहिद्दीन - ए -खाल्क्
5	इराक, सीरिया	आय. एस. आय. एस.
6	फिलीपींस	अबू सयाब गट
7	श्रीलंका	लिब्रेशन टायगर्स ऑफ तामिळ इलम(लिट्टे)
8	अफ़ग़ानिस्तान	अल-कायदा -वर्ड इस्लामिक फ्रंट, ओसामा बिन लादेन समर्थक संघटन
9	इजिप्त	गामा ऑल इस्लामिया
10	क्युबा	नॅशनल लिबरेशन आर्मी
11	लेबनॉन	हिजबुलल्लाह
12	आयरलैंड	आयरीश नॅशनल लिबरेशन आर्मी
13	कोलंबिया	रिव्होल्युशनरी आर्म फॉर्सेस ऑफ कोलंबिया
14	अल्जेरिया	आर्म इस्लामिक गट

अमेरिका द्वारा जारी सूची के अलावा, भारत में 142 आतंकवादी संगठन सक्रिय हैं, 33 जम्मू और कश्मीर में, 34 असम में, मणिपुर में 34, मेघालय में 35 और त्रिपुरा में 3 हैं।

भारत में आतंकवाद

आतंकवाद की समस्या भारत के लिए कोई नई बात नहीं है। अठारहवीं शताब्दी में, बहाबिश इस्लामिक कट्टरपंथी हिंसा वादी प्रवृत्ती के आतंकवादी बन गई।1872 में अंडमान द्वीप समूह में आतंकवादियों द्वारा व्हाईसराय को मार दिया गया था। 1948 से 1951 तक, पश्चिम बंगाल, आंध्र प्रदेश, केरल और भारत के पूर्वोत्तर राज्यों में नक्सली संगठन सक्रिय थे। तब से, देश के विभिन्न हिस्सों में आतंकवाद फैल गया है।

जम्मू और कश्मीर

हम गर्व के साथ कश्मीर को भारत के स्वर्ग और धरती पर स्वर्ग के रूप में संदर्भित करते हैं, लेकिन भारत सरकार और स्थानीय नेतृत्व अभी भी जम्मू-कश्मीर में शांति और व्यवस्था स्थापित करने में सफल नहीं हुए हैं। जम्मू-कश्मीर की राजनीति में नेशनल कॉन्फ्रेंस, कांग्रेस, अवामी नेशनल कॉन्फ्रेंस, इन राजनीतिक दलों ने अपने-अपने अस्तित्व की राजनीति की। परिणामस्वरूप, राज्य में निर्मित शून्य को भरने के लिए चरमपंथी गतिविधियाँ शुरू की गईं। जमात-ए-इस्लामी जैसे बल, जो कभी भी इसकी परिधि में नहीं आ सकते थे, अब मुख्यधारा में शामिल हो गए हैं। जमात के संस्थापक मौलवी अब्बास अंसारी ने 1986 में यूनाइटेड मुस्लिम फ्रंट और अन्य विपक्षी नेताओं के साथ अलगाववादी रास्ता अपनाया। सशस्त्र आंदोलन और आतंकवाद उसके नए हथियार बन गए। मोर्चे के कई नेता पाकिस्तान गए और वहाँ से कई आतंकवादी गतिविधियाँ हुईं। ट्राइब्स और अन्य अलगाववादी समूहों ने 1990 के बाद बने राजनीतिक शून्य को भरने की कोशिश की। यद्यपि आतंकवाद का एक राजनीतिक चेहरा है, यह हुर्रियत सम्मेलन के रूप में बनाया गया था। हुर्रियत में जमात-ए-इस्लामी सैयद अली शाह गिलानी, पीपुल्स लोन कॉन्फ्रेंस अब्दुल गनी लोन, फ्री काउंसिल के मौलवी अब्बास अंसारी और मुस्लिम कॉन्फ्रेंस के अब्दुल गनी भट शामिल हुए थे। हालांकि, हुर्रियत कश्मीर में आंदोलन को एक राजनीतिक चेहरा देने में विफल रहा। तब से कश्मीर में आतंकवाद बढ़ रहा है। जम्मू और कश्मीर को स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में हासिल करने और कश्मीर को पाकिस्तान में विलय करने के विचार का समर्थन करने के लिए कश्मीर में दो समूहों का गठन किया गया है। ये सभी दो समूह पाकिस्तान से हैं
जिस तरह का समर्थन मिल रहा है वह यह है कि हिजबुल मुजाहिदीन, लश्कर-ए-तैयबा, हरकत-उल-मुल्लादीन, अल-जिहाद जैसे कई आतंकवादी संगठन कश्मीर में सक्रिय नहीं हैं, लेकिन पूरे भारत में लाखों निर्दोष लोगों को यमन भेज रहे हैं। पिछले 25 वर्षों में, आतंकवादियों ने कई स्थानों पर बमबारी की है, निर्दोष लोगों की हत्या की है। समीक्षा निम्नानुसार ली जा सकती है।

13 मार्च ,1993	मुंबई में श्रृंखलाबद्ध बम विस्फोटों में कम से कम 257 लोग मारे गए थे।
1 अक्टूबर, 1997	फ्रंटियर मेल में तीन बम विस्फोट।
10 अक्टूबर, 1997	शांतीवन, किंग्सवे कैंप, दिल्ली में लाल किला के पास बम विस्फोट।
26 अक्टूबर, 1997	दिल्ली के करोल बाग इलाके के पास धमाका।
30 नवंबर,1997	दिल्ली के चांदनी चौक पर धमाका।
30 दिसंबर,1997	पंजाबी बाग में विस्फोट।
14 फरवरी ,1997	कोइंबतूर में 13 धमाके।
16 अप्रैल, 1999	हिलंबी कला रेलवे स्टेशन पर बम विस्फोट।
18 जून, 2000	लाल किले पर हमला।
1 अक्टूबर, 2001	जम्मू-कश्मीर विधानसभा पर आतंकवादी हमला 35 की मौत।
13 दिसंबर, 2001	संसद पर हमले में 7 की मौत।
24 सितंबर, 2002	गुजरात में हमलों ने लोगों की जान ले ली।
13 मार्च, 2003	मुंबई ट्रेन पर आतंकवादी हमला 11 की मौत।
14 मार्च, 2003	जम्मू के पास सेना के कैंप पर आतंकी हमला।
25 अगस्त, 2003	मुंबई में मुंबादेवी मंदिर, गेटवे ऑफ इंडिया बम विस्फोट, 50 लोग मारे गए।

15 अगस्त, 2004	असम में बम धमाका।
22 मई 2005	दिल्ली में सत्यम और लिबर्टी सिनेमा पर लगातार दो बम विस्फोट।
5 जुलाई, 2005	श्रीराम की जन्मभूमि अयोध्या में आतंकवादी हमला।
11 जुलाई, 2006	श्रीनगर में पांच बम धमाके
11 जुलाई 2006	मुंबई लोकल ट्रेन में पंद्रह से बीस मिनट के दौरान छह और सात धमाकों में 200 लोग मारे गए
23 नवंबर ,2007	लखनऊ, वाराणसी और फैजाबाद की अदालतों में विस्फोट 13 लोगों की मौत।
26 जुलाई, 2008	अहमदाबाद में 17 धमाकों में 50 की मौत।
26 सितंबर ,2008	मुंबई पर आतंकी हमला। ऑपरेशन 60 घंटे तक चला, जिसमें 200 से अधिक लोग मारे गए।
22 मई , 2009	गढ़चिरौली के जंगल में 16 पुलिसकर्मियों की मौत।
17 अप्रैल, 2010	बंगलौर में धमाका।
26 मई, 2011	मुंबई में बम धमाका।
1 अगस्त ,2012	पुणे में बम धमाका।
22 फरवरी ,2013	हैदराबाद में विस्फोट।
14 फरवरी ,2019	जम्मू-कश्मीर के पुलवामा जिले के श्रीनगर नेशनल हाईवे पर लेचा पोरा में बम विस्फोट में केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) के कम से कम 40 जवान मारे गए।

तरह, भारत को हर साल आतंकवादी हमलों का सामना करना पड़ता है। जम्मू-कश्मीर में आतंकवादियों की हिंसक वारदातें जारी हैं और आतंकवादी संगठन पूरी दुनिया में आतंक फैला रहे हैं। फ्रांस, रूस, इंग्लैंड और अमेरिका में आतंकवादी हमले हो रहे हैं। ISIS अपनी जिम्मेदारी स्वीकार कर रहा है। भारत आतंकवादी गतिविधियों के लिए नए युवाओं की भर्ती करने के लिए भी काम कर रहा है। 2016 से, उनके शिविरों पर हमला करके सैन्य कर्मियों का मनोबल गिराने का प्रयास किया गया है। आतंकवाद को समग्र रूप से देखते हुए, यह स्पष्ट है कि दुनिया के अधिकांश देश आंतरिक और अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद से त्रस्त हैं। आतंकवाद की प्रकृति, उनकी गति और विधियां सबसे अमानवीय हैं। यह आतंकवाद है जो मानव संस्कृति, सभ्यता और प्रगति को नष्ट कर देता है।

आतंकवाद के कारण

11 सितंबर, 2001 को संयुक्त राज्य अमेरिका के वर्ल्ड ट्रेड सेंटर और उसके सैन्य मुख्यालय पर हुए आतंकवादी हमले ने संयुक्त राज्य अमेरिका और दुनिया के बाकी हिस्सों को जगा दिया। इस चर्चा से, हम कह सकते हैं कि आतंकवाद या आतंकवादी पैदा नहीं होते हैं। आतंकवाद अलग कारणों से बढ़ता है, अर्थात आतंकवादी मूल रूप से आतंकवादी नहीं होते हैं, लेकिन वे समाज या विभिन्न राज्य प्रणालियों से पैदा होते हैं।

1. सामाजिक और सांस्कृतिक कारण

कुछ समाजशास्त्रियों के अनुसार, आतंकवाद सामाजिक असुरक्षा की भावना से उत्पन्न होता है क्योंकि असफलता, अभाव, अकेलेपन का विचार समाज में रहते हुए अवसाद की ओर ले जाता है। इसके अलावा, कुछ लोगों के पास विकास की प्रक्रिया में सामाजिक जीवन, दुर्लभ संसाधनों या फैसलों में हिस्सेदारी नहीं है, इसलिए वे आतंकवाद की ओर रुख करते हैं। उदाहरण के लिए, हमारी संस्कृति की रक्षा के लिए आतंकवाद को अपनाने पर जोर दिया गया है। श्रीलंका में दो तमिल और सिंहली जनजातियों के बीच संघर्ष हुआ। यह इस बात से था कि सिंहली ने तमिल राजवंश पर अन्याय किया था।

2. वित्तीय कारण

देश की अनिश्चित आर्थिक स्थिति, आर्थिक शोषण, पूंजीवाद और जमींदारवाद से निराश युवाओं ने आतंकवाद का रुख किया है। साथ ही सीमावर्ती क्षेत्रों में घने जंगलों में रहने वाले लोग। उन्हें सरकार द्वारा कोई वित्तीय सुविधा प्रदान नहीं की जाती है, इसलिए वे दिन-प्रतिदिन गरीबी में जी रहे हैं। इसी समय, अगर कोई उन्हें बड़ी राशि का लालच देता है, तो वे बदले में कुछ भी करने को तैयार रहते हैं, जैसे कि पैसे के लिए हत्या, बमबारी।

ऐसे मामलों में, आतंकवाद कई कारणों से बढ़ रहा है। विदेशी सेना अप्रत्यक्ष रूप से अपने हितों के अनुसार आतंकवाद का समर्थन करती है।

3. राजनीतिक कारण

आतंकवाद को जन्म देने वाले राजनीतिक कारणों में राष्ट्रीय हितों, विस्तारवादी नीतियों, बदला लेने की प्रवृत्ति, राष्ट्रवाद का सिद्धांत शामिल है। कुछ राष्ट्रों के आर्थिक और राजनीतिक हित हैं जिन्हें अन्य राष्ट्रों से खतरा है। ऐसे राष्ट्र आतंकवाद को बढ़ावा देते हैं जब वे देखते हैं कि उनके हितों को खतरा है। उदाहरण के लिए, आतंकवाद को पैदा करने में मदद करता है। कश्मीर हमारा है, इसे भारत युद्ध से नहीं जीत सकता, इसलिए पाकिस्तान ने अपनी प्रतिष्ठा और हितों की रक्षा के लिए कश्मीर में आतंकवाद का इस्तेमाल किया। अपनी प्रतिष्ठा और हितों की रक्षा के लिए, अमेरिका ने शुरू में पाकिस्तान, भारत और अफगानिस्तान में तालिबान शासन को आतंकवाद को बढ़ावा दिया, लेकिन जैसे ही आतंकवाद ने अमेरिका पर हमला किया, अमेरिका ने अपने हितों की रक्षा के लिए आतंकवाद से लड़ना शुरू कर दिया। कुछ राष्ट्रों की नीति विस्तारवाद पर आधारित है, जिसका अर्थ है कि वे दूसरों पर हावी होने की कोशिश करते हैं। यह प्रयास संबंधित राष्ट्रों द्वारा विरोध नहीं किया जाता है, लेकिन कुछ युवा एक साथ आते हैं और इस तरह के शासन का विरोध करते हैं, जो आतंकवाद को पैदा करने में मदद करता है। उदाहरण के लिए। फिलिस्तीनी क्षेत्रों में इजरायल का गठन किया गया था। इजरायल धीरे-धीरे फिलिस्तीनी क्षेत्रों में प्रभावी हो गया। अफगानिस्तान में सशस्त्र बलों द्वारा आक्रमण का विरोध करने के लिए तालिबान का गठन किया गया था। जब बदला लेने की प्रवृत्ति उन लोगों में पैदा होती है जो उस समय सड़कों पर उतरते हैं जब इसे संबंधित लोगों द्वारा नजरअंदाज किया जाता है, तो वे आतंकवाद के कृत्यों का सहारा लेते हैं, कभी-कभी इस शक्तिशाली शक्ति के खिलाफ लड़ने के लिए मानव बम ले जाते हैं, उदाहरण के लिए। यह श्रीलंकाई सरकार के खिलाफ तमिलों द्वारा लिया गया रास्ता है। भारत को विभाजित

देखने के इस अवसर का लाभ उठाते हुए, पाकिस्तान ने सांप्रदायिक घृणा के जहर को खत्म कर दिया और आतंकवाद के निर्माण में योगदान दिया।

4. धार्मिक कारण

कट्टरपंथी और धार्मिक कट्टरपंथी आतंकवाद का रास्ता अपनाकर अपनी विचारधारा और धार्मिक सिद्धांतों को अपनाते हैं। उदाहरण के लिए। ओसामा बिन लादेन अल कायदा रुपी आतंकवाद में मुसलमानों का इस्लामिक जिहाद धार्मिक कारण पुराने मजबूत रूप में निहित है। कश्मीर में पंडितों या हिंदुओं की हत्या धार्मिक आतंकवाद का परिणाम है। पाकिस्तान ने धार्मिक कट्टरता की आड़ में भारत के खिलाफ आतंकवाद शुरू किया है।

5. गरीबी और बेरोजगारी

कभी-कभी सरकार की उदासीनता राष्ट्र के विकास में बाधा बनती है। लोग अपनी बुनियादी जरूरतों को पूरा करने में सक्षम नहीं होते हैं, जिससे उनके जीवन में गुस्से के साथ-साथ उदासीनता भी आती है। युवाओं को कड़ी मेहनत करने और शिक्षा प्राप्त करने के बाद भी नौकरी या रोजगार नहीं मिलती है और वे बेरोजगार रहते हैं। ऐसे समय में देश में गरीबी और बेरोजगारी अधिक है, यही वजह है कि युवा आतंकवाद की ओर रुख करते हैं। साथ ही, युवक को यकीन है कि सरकार उसकी उम्मीदों पर खरी नहीं उतर रही है।

आतंकवाद का कुप्रभाव

आतंकवाद हिंसा का एक रूप है, विशेष रूप से भीड़ भरे स्थानों में, मानव बम से लेकर घातक बम जैसे RDX, जो विभिन्न प्रकार के विस्फोटकों और परिष्कृत हथियारों का उपयोग करते हैं, निर्दोष लोगों की हत्या करते हैं।

1. भारत में बढ़ते आतंकवाद ने आम लोगों के जीवन को असुरक्षित और भयावह बना दिया है
2. आतंकवादी कृत्य से जानमाल का बहुत नुकसान होता है।
3. आतंकवादी बमबारी, रेलवे स्टेशन की बसों को जलाना, विमानों को अपहरण करना जैसे कार्य करते हैं, जिससे आर्थिक नुकसान होता है।
4. आतंकवादी कृत्यों में नागरिक
5. पुलिस बल में सैनिक मारे जाते हैं, उनके आश्रित निराश्रित हो जाते हैं और विधवाओ को समस्या होती है।
6. सैन्य अभियानों और सैन्य अर्धसैनिक नागरिकों में विकलांगता विकलांगता का मुद्दा उठाती है।
7. आतंकवादी लोगों को डराने का काम करते हैं। लोगों को अपना घर छोड़ना पड़ता है, इसलिए आईडीपी की समस्या उत्पन्न होती है, उदाहरण के लिए, कश्मीरी पंडित।
8. सरकार द्वारा किए गए विकास कार्य बर्बाद हो जाते हैं। विकास कार्य में बहुत बाधा आती है।
9. आतंकवाद से देश की एकता और अखंडता को खतरा है।
10. अल्पसंख्यक समुदाय के आंकड़ों को संदेह की दृष्टि से देखा जाता है।
11. लोगों के मन में डर की भावना पढती है,
12. इससे मानसिक बीमारी से जूझना पड़ता है।
13. जम्मू-कश्मीर में जारी आतंकवादी गतिविधियों को हर दिन स्कूलों और कॉलेजों को बंद करना पड़ता है और पर्यटन व्यवसाय को प्रभावित करता है।
14. चूंकि निर्दोष लोगों के शिकार आतंकवादी हमलों के शिकार होते हैं, इसलिए राज्य सरकार और राज्य प्रणाली में जनता का विश्वास हिल गया है।
15. मानव संस्कृति पर आतंकवाद का प्रभाव और सभ्यता को नष्ट कर देता है।
16. आतंकवाद पड़ोसी देशों के साथ संबंधों को प्रभावित करता है।
17. इलाके में शांति और सुरक्षा को खतरा है।

आतंकवाद को मिटाने के उपाय

आतंकवाद न केवल भारत के बल्कि पूरे विश्व की आर्थिक और राजनीतिक शांति और सुरक्षा के लिए खतरा है। दुर्भाग्य से, आतंकवाद जैसे संवेदनशील मुद्दों को उतनी गंभीरता से नहीं लिया गया है जितना उन्हें होना चाहिए था। आतंक पर युद्ध एक अदृश्य दुश्मन के खिलाफ लड़ा जाता है। किसी भी अन्य युद्ध में, दुश्मन स्पष्ट है और इसे दूर करने के लिए विभिन्न रणनीति अपनाई जा सकती है। लेकिन आतंकवाद के मामले में ऐसा नहीं है। हालाँकि, यह सच है कि आतंकवाद से मुक्त दुनिया की आवश्यकता सभी मनुष्यों को महसूस होती है। इसके लिए, यह सभी संप्रभु देशों के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक साथ आने और किसी भी देश में न केवल उस देश की समस्या के रूप में बल्कि वैश्विक संकट के रूप में आतंकवाद से लड़ने का समय है। जिससे आतंकवाद बढ़ा है। इसका सबसे बड़ा झटका भारत पर पड़ा है, जो पिछले तीन दशकों से अकेले आतंकवाद से जूझ रहा है। फिर भी भारत ने आतंकवाद को समाप्त करने में अपेक्षित सफलता हासिल नहीं की है। भारत को आतंकवाद के खतरों को पहचान कर आतंकवाद के उन्मूलन के लिए और कदम उठाने की जरूरत है।

1. रक्षा प्रणाली को मजबूत बनाना

भारत की रक्षा प्रणाली मजबूत बताई जाती है। लेकिन इसे पूरी तरह से मजबूत नहीं कहा जा सकता है। देश के विभिन्न हिस्सों में अब तक हुए आतंकवादी हमलों से पता चला है कि पुलिस बल, सुरक्षा तंत्र, राजनीतिक हस्तक्षेप और भ्रष्टाचार पिछले कुछ वर्षों में बढ़े हैं। इसके उदाहरण हैं। इसके उदाहरणों में भ्रष्टाचार को कम करने, राजनीतिक हस्तक्षेप और सुरक्षा प्रणाली को अधिक कुशल और प्रभावी बनाकर आतंकवाद को नियंत्रित करने के लिए भारत को अधिक कुशल और मजबूत बनाने की आवश्यकता है।

2. मीडिया की भूमिका

आतंकवाद को नियंत्रित करने के लिए मीडिया की भूमिका महत्वपूर्ण है। मीडिया एक व्यावसायिक दृष्टिकोण से आतंकवादी हमलों की मनमानी रिपोर्ट करता है। मुंबई में आतंकवादियों के खिलाफ कार्रवाई को मीडिया द्वारा चित्रित किया गया था, लेकिन इससे परे, वे अपने सैनिकों या सेना के आतंकवादियों के खिलाफ क्या कार्रवाई कर रहे हैं। आतंकवादियों को एक तरह की पूर्वाभास के रूप में चित्रित करके, मीडिया को भेदभाव करना चाहिए। देश की अखंडता, अखंडता और सुरक्षा के लिए प्रतिबद्धता होनी चाहिए। इस तथ्य से बचने के लिए मीडिया को आतंकवाद के खिलाफ एक स्टैंड लेने की जरूरत है कि मनमानी रिपोर्टिंग से जनता में नाराजगी की लहर पैदा होती है और बदले की भावना बढ़ती है, और सामाजिक सामंजस्य बनाए रखने के लिए।

3. शिक्षण पद्धति में सुधार

प्रचलित शिक्षण पद्धति में कई कमियाँ हैं। देश में बेरोजगारी बढ़ रही है क्योंकि वर्तमान शिक्षा प्रणाली रोजगार प्रदान नहीं करती है। रोजगार के अवसर न मिलने पर बेरोजगार निराश महसूस करते हैं। अगर हम आतंकवादी संगठन को उनका फायदा उठाने से रोकना चाहते हैं, तो हमें देश में शिक्षा प्रणाली में सुधार करना होगा और रोजगारोन्मुखी शिक्षा प्रदान करनी होगी। साथ ही, देश के सभी समाजों को एक ऐसी शिक्षा प्रणाली की आवश्यकता है जो लोगों में देशभक्ति की भावना पैदा करे।

4. बढ़ती जा रही धार्मिककट्टरता पर अंकुश ।

यद्यपि देश में शिक्षा का स्तर दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है, लेकिन धर्म का प्रभाव कम नहीं हो रहा है। धर्मनिरपेक्षता धीरे-धीरे घट रही है। धर्मवाद बढ़ रहा है। प्रत्येक धर्म का स्वरूप उच्च विचारधारा से भरा है। लेकिन वास्तव में, धर्म का स्वरूप विकृत हो रहा है। कई लोगों का मानना है कि धर्म को केवल हिंसा से और इसे स्वीकार करने वालों के खिलाफ विरोध करके संरक्षित किया जा सकता है। लेकिन यह सहिष्णु भूमिका नहीं है। भारत के संविधान ने एक धर्मनिरपेक्ष राज्य की स्थापना की है। इसलिए बढ़ती धार्मिकता

इसे रोकने के लिए सख्त कदम उठाए जाने की जरूरत है। खासतौर पर मुसलमानों में कट्टरता की दर बहुत अधिक है। इसे कम करने के लिए, मुस्लिम समुदाय में शिक्षा का प्रसार करना आवश्यक है।

5. राष्ट्रीय कार्य में युवाओं की भागीदारी

भारत को युवाओं के देश के रूप में जाना जाता है। रचनात्मक कार्यों के लिए ऐसी युवा ऊर्जा का उपयोग करना आवश्यक हो गया है। युवा देश की रीढ़ है। आतंकवादी संगठन रोजगार, पैसा और कट्टरता के प्रलोभन के माध्यम से युवाओं को आकर्षित कर रहे हैं। इसलिए, चूंकि आतंकवादी संगठनों में युवाओं की संख्या अधिक है, इसलिए आतंकवाद को रोकने के लिए युवाओं को राष्ट्रीय गतिविधियों में शामिल करने के लिए आवश्यक कदम उठाना आवश्यक है।

6. आर्थिक असमानता को कम करना ।

वैश्वीकरण, उदारीकरण, और निजीकरण देश में पूंजीवाद का विकास कर रहे हैं। पूंजीकरण के कारण गरीबी, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, असमानता बढ़ रही है। यदि युवाओं को आतंकवादी संगठनों में शामिल होने से रोका जाना है, तो सरकार को बेरोजगारी, गरीबी, भ्रष्टाचार और असमानता को कम करने के लिए विभिन्न नीतियों को तैयार करना और लागू करना होगा।

7. सख्त कानून और स्वतंत्र अदालतें

आतंकवाद पर लगाम लगाने के लिए सख्त कानूनों की जरूरत है। साथ ही आतंकवाद के मामलों में मुकदमा चलाने के लिए एक स्वतंत्र अदालत होनी चाहिए। ताकि आतंकी मामलों के फैसले त्वरित हों और दया के आवेदन के कारण दोषी आतंकवादियों के लिए मौत की सजा में देरी हो। इसलिए, अगर तीन महीने के भीतर इस तरह के आवेदन पर कोई निर्णय नहीं होता है, तो संसद को इसे रद्द करने के लिए कानूनी प्रावधान के साथ एक कानून बनाना चाहिए।

8. सद्भाव और सहिष्णुता की भावना

भारत कई धर्मों, जातियों और भाषाओं का देश है। ऐसे विविध देश की एकता और अखंडता को बनाए रखने के लिए और आतंकवाद से लड़ने के लिए राजनीतिक दल और नेता सद्भाव और सहिष्णुता की भावना को बनाए रखते हुए अल्पसंख्यकों में असुरक्षा की भावना पैदा नहीं करेंगे। ऐसी व्यवस्था का राजनीतिकरण करना बहुत जरूरी है। अन्यथा, बड़े आतंकवादी हिंसक घटनाओं का कारण बनते हैं लेकिन पूरे मुस्लिम समुदाय को जवाबदेह ठहराया जाता है और उग्रवादी होने की भावना पैदा की जाती है। इसलिए, कुछ लोगों के कार्यों के लिए पूरे समाज को जिम्मेदार ठहराना गलत है। इतना ही नहीं, इस घटना का विरोध बकरी ईद पर काले रिबन से किया गया था। राजनीतिक दलों, नेताओं और हम सभी को इससे सीख लेनी चाहिए। उज्जवल निकम कहते हैं कि यदि आतंकवाद एक धर्म नहीं है, तो यह एक प्रवृत्ति है।

9. आतंकवाद नियंत्रण के अलग खाते।

भारत में आतंकवाद को नियंत्रित करने के लिए गृह विभाग जिम्मेदार है। गृह विभाग के बड़े आकार के कारण, आतंकवाद को ठीक से नियंत्रित करना मुश्किल है। इसमें कई कमियां हैं, इसलिए आतंकवाद को नियंत्रित करने की जिम्मेदारी को गृह विभाग में स्थानांतरित नहीं किया जाना चाहिए, लेकिन आतंकवाद को नियंत्रित करने के लिए एक अलग विभाग स्थापित किया जाना चाहिए। इस विभाग के माध्यम से संचार, सुरक्षा बलों के लिए विशेष प्रशिक्षण, अत्याधुनिक उपकरण, खुफिया एजेंसियों का एक नेटवर्क, प्रमुख शहरों में सूचनाओं का आदान-प्रदान। एस जी यूनिट के गठन से ऐसी कई चीजों पर ध्यान दिया जा सकेगा। इसलिए, आतंकवाद का नियंत्रण अधिक ध्यान से किया जा सकता है

10. आतंकवाद को बढ़ावा देने वाले राष्ट्रों पर अंतर्राष्ट्रीय नियंत्रण।

प्रत्येक देश को जीओ और जीने दो की नीति के अनुसार दूसरे देश में आतंकवाद को बढ़ावा देना बंद करना आवश्यक हो गया है। इसके लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कड़े फैसलों की जरूरत है। संयुक्त राष्ट्र जैसे अंतरराष्ट्रीय संगठनों के माध्यम से आतंकवाद का बचाव करने वाले राष्ट्रों पर इस तरह का दबाव डालना संभव है। आतंकवादियों को वित्तीय सहायता के अन्य स्रोतों को काटने के लिए अन्य देशों के साथ संयुक्त परियोजनाओं की कोशिश करना आवश्यक है। ऐसी रणनीति बनाना आवश्यक है।

11. युद्ध आतंकवाद को समाप्त करने का विकल्प नहीं है।

भारत के खिलाफ सीधा युद्ध छेड़ने की तुलना में पाकिस्तान के लिए आतंकवाद का रास्ता अपनाना ज्यादा सुविधाजनक है। इस कारण से, भारत में पाकिस्तान से समर्थन और सहायता प्राप्त करना जारी है। इसलिए भारत के पास भारत में आतंकवाद के जवाब में पाकिस्तान के साथ युद्ध करने के अलावा कोई विकल्प नहीं है। यहां तक कि संयुक्त राज्य अमेरिका जैसे शक्तिशाली देश को युद्ध के माध्यम से आतंकवाद का अंत नहीं दिखता है, बल्कि वृद्धि हुई है। किसी भी अन्य युद्ध में स्पष्ट रूप से दुश्मन का मुकाबला करने के लिए कई तरह के हथकंडे अपनाए जा सकते हैं। लेकिन आतंकवाद के मामले में ऐसा नहीं है। आतंक के खिलाफ लड़ाई एक अदृश्य दुश्मन के

खिलाफ लड़ी जाती है। भारत को इसे गुरिल्ला युद्ध से लड़ना होगा। साथ ही भारत को अंतरराष्ट्रीय संगठनों के माध्यम से पाकिस्तान पर लगातार दबाव बनाने के लिए कूटनीति अपनानी चाहिए। सीमा पार आतंकवाद को मिटाने के लिए, भारत को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विकसित राष्ट्रों के साथ समझौतों का समापन करके अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सभी देशों के बीच एकता बनाने में प्रभावी भूमिका निभाने की आवश्यकता है।

निष्कर्ष

आज आतंकवाद एक नए आयाम पर ले गया है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर, यह पैटर्न 9/11 की घटनाओं के बाद आकार लिया। 9/11 के हमले सिर्फ अमेरिका के खिलाफ नहीं थे, वे अमेरिकी मूल्यों के खिलाफ थे। पश्चिमी देशों ने वैश्विक स्तर पर जिन मूल्यों को बढ़ावा देना चाहा है उनमें लोकतंत्र, धर्मनिरपेक्षता, उदारवाद, वस्तुनिष्ठ सोच, व्यक्तिवाद, मानवाधिकार, संवैधानिकता और कानून का शासन शामिल हैं।

भारत के सामने बढ़ती और बदलती चुनौतियों का सामना करते हुए, हमें संकीर्ण राजनीतिक मानसिकता से बाहर निकलने की जरूरत है। इसमें आतंकवाद की रोकथाम से लेकर सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की योजना तक एक ठोस प्रयास की आवश्यकता है।

संदर्भ सूची

1 भारतीय शासन आणि राजकारण -प्राध्यापक डॉ. विजय बोबडे
2 Antarrashtriya Rajkaran: Sankalpana Siddhant Aani Samasya by+ Rumki Basu
3 भारताचे शासन आणि राजकारण प्रा. श्रीकांत वि. देशपांडे
4 भारताचे शासन आणि राजकारण -डॉ.भास्कर लक्ष्मण भोळे
5 भारताचे शासन आणि राजकारण- प्राध्यापक र.घ.वराळकर
6 भारतीय गणराज्याचे शासन आणि राजकारण- डॉ भास्कर लक्ष्मण भोळे
7 भारतीय शासन व राजकारण -प्राध्यापक डॉ. स्मिता जोशी
8 भारतीय शासन आणि राजकारण -प्राध्यापक डॉ. विजय बोबडे
9 हस्तक्षेप.com- राम पुनियानी "वैश्विक आतंकवाद बिगड रहे है हालात." लेख
10 इस्लामवादी आतंकवाद: परदे के पीछे की राजनीति" लेख
11 राम पुनियानी "palashbisawaslive